ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218
PP. NO.- 220-222
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-I, Issues-X YEAR- June -2018

मेक इन इंडिया योजना : भारतीय विनिर्माण एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल

डॉ0 राकेश कुमार ओझा
सहायक आचार्य
अर्थशास्त्र, महाविद्यालय भटवली बाजार (उनवल) गोरखपुर (उ०प्र०) भारत

सारांश – *भारत एक विकासशील राष्ट्र के रूप में लंबे समय से औद्योगिक विकास, रोजगार सृजन और आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में प्रयासरत रहा है। वैश्वीकरण और उदारीकरण के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था में तीव्र परिवर्तन हुए, किन्तु विनिर्माण क्षेत्र अपेक्षित गति से विकसित नहीं हो पाया। इसी चुनौती को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने 25 सितम्बर 2014 को "मेक इन इंडिया" योजना का शुभारम्भ किया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य भारत को वैश्विक विनिर्माण केन्द्र के रूप में स्थापित करना, विदेशी निवेश को आकर्षित करना, रोजगार के अवसर बढ़ाना तथा तकनीकी नवाचार को प्रोत्साहित करना था।*

*मेक इन इंडिया योजना के अंतर्गत ऑटोमोबाइल, रक्षा उत्पादन, रेलवे, इलेक्ट्रॉनिक्स, सूचना प्रौद्योगिकी, वस्त्र उद्योग, जैव–प्रौद्योगिकी आदि 25 क्षेत्रों को प्राथमिकता दी गई। इस योजना ने **"Ease of Doing Business"**, डिजिटलीकरण, श्रम सुधार, कर सुधार तथा स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा दिया। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) में वृद्धि, मोबाइल निर्माण उद्योग का विस्तार तथा रक्षा उत्पादन में स्वदेशीकरण जैसी उपलब्धियाँ इस योजना की सफलता को दर्शाती हैं।*

हालाँकि भूमि अधिग्रहण, आधारभूत संरचना की कमी, कौशल विकास की चुनौतियाँ तथा वैश्विक आर्थिक अस्थिरता जैसी समस्याएँ अभी भी विद्यमान हैं। इसके बावजूद यह योजना भारत को आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था और वैश्विक औद्योगिक शक्ति बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुई है।

प्रस्तावना– 21वीं सदी में आर्थिक विकास का प्रमुख आधार औद्योगिकीकरण और तकनीकी नवाचार बन गया है। जिन देशों ने अपने विनिर्माण क्षेत्र को सशक्त बनाया, वे वैश्विक अर्थव्यवस्था में अग्रणी बनकर उभरे। चीन, जापान, दक्षिण कोरिया और जर्मनी इसके प्रमुख उदाहरण हैं। भारत में भी स्वतंत्रता के बाद से औद्योगिक विकास हेतु अनेक योजनाएँ बनाई गईं, परंतु विनिर्माण क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में योगदान अपेक्षाकृत कम रहा।

भारत में सेवा क्षेत्र की तीव्र वृद्धि हुई, किन्तु विनिर्माण क्षेत्र रोजगार और निर्यात क्षमता के दृष्टिकोण से पीछे रह गया। देश की बढ़ती जनसंख्या और युवाओं की संख्या को देखते हुए बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन आवश्यक था। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री Narendra Modi ने 25 सितम्बर 2014 को "मेक इन इंडिया" कार्यक्रम की शुरुआत की।

इस योजना का मूल उद्देश्य भारत को "Manufacturing Hub" बनाना था, ताकि विदेशी कंपनियाँ भारत में उत्पादन इकाइयाँ स्थापित करें तथा भारतीय उद्योगों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के योग्य बनाया जा सके। इस पहल के माध्यम से "Zero Defect, Zero Effect" की अवधारणा को बढ़ावा दिया गया, जिसका अर्थ है–उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों का निर्माण तथा पर्यावरण पर न्यूनतम प्रभाव।

मेक इन इंडिया केवल एक औद्योगिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि यह भारत की आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी प्रगति का व्यापक अभियान है। यह योजना रोजगार सृजन, निर्यात वृद्धि, कौशल विकास, तकनीकी हस्तांतरण और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

मेक इन इंडिया योजना की पृष्ठभूमि– भारत में आर्थिक उदारीकरण की शुरुआत 1991 में हुई। इसके पश्चात विदेशी निवेश और निजी क्षेत्र को बढ़ावा मिला। हालांकि सेवा क्षेत्र ने तीव्र विकास किया, लेकिन विनिर्माण क्षेत्र ळक्च में लगभग 15–16 प्रतिशत तक सीमित रहा। विकसित देशों की तुलना में यह बहुत कम था।

भारत की बड़ी युवा आबादी को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए विनिर्माण क्षेत्र का विस्तार आवश्यक था। साथ ही, भारत का आयात विशेषकर इलेक्ट्रॉनिक्स, रक्षा उपकरणों और मशीनरी के क्षेत्र में अधिक था। इससे व्यापार घाटा बढ़ता जा रहा था।

वैश्विक कंपनियाँ चीन पर अत्यधिक निर्भर थीं। भारत ने इस स्थिति को अवसर के रूप में देखा और विदेशी कंपनियों को आकर्षित करने हेतु मेक इन इंडिया अभियान प्रारम्भ किया। इसका उद्देश्य भारत को "विश्व की फैक्ट्री" बनाना था।

मेक इन इंडिया योजना के उद्देश्य– मेक इन इंडिया योजना के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. **विनिर्माण क्षेत्र को बढ़ावा देना:** योजना का मुख्य उद्देश्य भारत के विनिर्माण क्षेत्र की GDP में हिस्सेदारी को बढ़ाना था। सरकार ने इसे 25 प्रतिशत तक पहुँचाने का लक्ष्य निर्धारित किया।
2. **रोजगार सृजन:** भारत में बेरोजगारी एक गंभीर समस्या रही है। औद्योगिक विकास के माध्यम से करोड़ों युवाओं को रोजगार प्रदान करना इस योजना का महत्वपूर्ण उद्देश्य था।
3. **विदेशी निवेश आकर्षित करना:** FDI नीति में सुधार कर विदेशी कंपनियों को भारत में निवेश हेतु प्रोत्साहित किया गया।

4. **तकनीकी विकासः** नई तकनीकों का हस्तांतरण, अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा देना भी योजना का प्रमुख उद्देश्य है।
5. **निर्यात में वृद्धिः** भारतीय उत्पादों की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाकर निर्यात को प्रोत्साहित करना इस अभियान का महत्वपूर्ण लक्ष्य है।
6. **आत्मनिर्भरता को बढ़ावाः** रक्षा, इलेक्ट्रॉनिक्स और मशीनरी जैसे क्षेत्रों में आयात निर्भरता कम करना तथा स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा देना।

मेक इन इंडिया योजना के प्रमुख क्षेत्र– मेक इन इंडिया योजना के अंतर्गत 25 प्रमुख क्षेत्रों को शामिल किया गया। इनमें प्रमुख हैं– ऑटोमोबाइल उद्योग, रक्षा उत्पादन, रेलवे, इलेक्ट्रॉनिक्स, सूचना प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी, औषधि उद्योग, वस्त्र उद्योग, रसायन उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण, निर्माण क्षेत्र, ऊर्जा क्षेत्र आदि। इन क्षेत्रों में निवेश बढ़ाने हेतु विशेष नीतियाँ एवं प्रोत्साहन प्रदान किए गए।

योजना की प्रमुख विशेषताएँ–

1. **Ease of Doing Business:** व्यवसाय प्रारम्भ करने की प्रक्रिया को सरल बनाया गया। लाइसेंस प्रणाली को आसान किया गया तथा ऑनलाइन स्वीकृति प्रणाली विकसित की गई।

2. **डिजिटल इंडिया से समन्वयः** डिजिटल इंडिया अभियान के साथ मेक इन इंडिया को जोड़ा गया, जिससे प्रशासनिक प्रक्रियाओं में पारदर्शिता और दक्षता बढ़ी।

3. **कौशल विकासः "**India" कार्यक्रम के माध्यम से युवाओं को उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुसार प्रशिक्षित किया गया।

4. **औद्योगिक कॉरिडोरः** दिल्ली–मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर, अमृतसर–कोलकाता औद्योगिक कॉरिडोर जैसे परियोजनाओं को विकसित किया गया।

5. **स्मार्ट सिटी विकासः** औद्योगिक विकास के साथ–साथ आधुनिक शहरी आधारभूत संरचना विकसित करने हेतु स्मार्ट सिटी मिशन को प्रोत्साहित किया गया।

मेक इन इंडिया और विदेशी निवेश– मेक इन इंडिया योजना के बाद भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। रक्षा, रेलवे, बीमा और निर्माण क्षेत्रों में थ्क् सीमा बढ़ाई गई। विश्व की अनेक बड़ी कंपनियों जैसे– Samsung, Apple, Foxconn, Tesla. ने भारत में विनिर्माण संभावनाओं में रुचि दिखाई।

मोबाइल निर्माण के क्षेत्र में भारत विश्व के प्रमुख देशों में शामिल हो गया। पहले अधिकांश मोबाइल फोन आयात किए जाते थे, लेकिन अब भारत में बड़े पैमाने पर मोबाइल निर्माण हो रहा है।

रक्षा क्षेत्र में मेक इन इंडिया– रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। भारत लंबे समय तक रक्षा उपकरणों के आयात पर निर्भर रहा। मेक इन इंडिया के माध्यम से रक्षा उत्पादन में स्वदेशीकरण को बढ़ावा दिया गया।

सरकार ने निजी क्षेत्र को रक्षा उत्पादन में भागीदारी की अनुमति दी तथा विदेशी कंपनियों के साथ संयुक्त उद्यमों को प्रोत्साहित किया।

Hindustan Aeronautics Limited तथा Bharat Electronics Limited जैसी कंपनियों ने स्वदेशी रक्षा उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। "तेजस" लड़ाकू विमान, "धनुष" तोप तथा स्वदेशी मिसाइल प्रणाली इस दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं।

इलेक्ट्रॉनिक्स एवं मोबाइल निर्माण में सफलता– भारत पहले इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं का बड़ा आयातक था। मेक इन इंडिया के बाद मोबाइल निर्माण उद्योग में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। Xiaomi, Vivo तथा Oppo जैसी कंपनियों ने भारत में उत्पादन इकाइयाँ स्थापित कीं। इससे–

- रोजगार बढ़ा
- आयात कम हुआ
- निर्यात में वृद्धि हुई
- तकनीकी हस्तांतरण संभव हुआ
- रोजगार सृजन में भूमिका

मेक इन इंडिया योजना का प्रमुख लक्ष्य युवाओं के लिए रोजगार उपलब्ध कराना था। विनिर्माण क्षेत्र श्रम–प्रधान होता है, इसलिए इससे बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन की संभावना रहती है। औद्योगिक इकाइयों के विस्तार से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार के रोजगार बढ़े। विशेषकर ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, वस्त्र तथा निर्माण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई। महिलाओं की औद्योगिक क्षेत्र में भागीदारी भी बढ़ी है।

मेक इन इंडिया और स्टार्टअप संस्कृति– मेक इन इंडिया ने भारत में उद्यमिता और नवाचार को भी प्रोत्साहित किया। इसके साथ "Startup India" कार्यक्रम को जोड़ा गया। नई कंपनियों को–

- वित्तीय सहायता
- कर में छूट
- नवाचार प्रोत्साहन
- तकनीकी सहयोग, प्रदान किया गया।

भारत विश्व के प्रमुख स्टार्टअप देशों में शामिल हो गया है। सूचना प्रौद्योगिकी, ई–कॉमर्स, फिनटेक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में तेजी से विकास हुआ है।

योजना की उपलब्धियाँ–

1. **FDI में वृद्धिः** भारत विश्व के प्रमुख FDI आकर्षण केन्द्रों में शामिल हुआ।
2. **मोबाइल निर्माण में सफलताः** भारत विश्व का प्रमुख मोबाइल निर्माण केन्द्र बनकर उभरा।
3. **रक्षा आत्मनिर्भरताः** स्वदेशी रक्षा उत्पादन को बढ़ावा मिला।
4. **वैश्विक पहचानः** भारत की औद्योगिक छवि मजबूत हुई।
5. **रोजगार वृद्धिः** विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़े।
6. **निर्यात में सुधारः** विनिर्माण आधारित निर्यात में वृद्धि हुई।

मेक इन इंडिया योजना की चुनौतियाँ– यद्यपि योजना सफल रही है, फिर भी कई चुनौतियाँ सामने आईंकृ

1. **आधारभूत संरचना की कमीः** कई क्षेत्रों में सड़क, बिजली, परिवहन और लॉजिस्टिक्स की कमी औद्योगिक विकास में बाधा बनी।
2. **कौशल की कमीः** उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप कुशल श्रमिकों की उपलब्धता अभी भी चुनौती है।
3. **भूमि अधिग्रहण समस्याः** औद्योगिक परियोजनाओं हेतु भूमि उपलब्ध कराना कठिन रहा।
4. **वैश्विक प्रतिस्पर्धाः** चीन, वियतनाम और बांग्लादेश जैसे देशों से प्रतिस्पर्धा बनी हुई है।
5. **नौकरशाही जटिलताएँः** यद्यपि सुधार हुए हैं, फिर भी कुछ क्षेत्रों में प्रशासनिक प्रक्रियाएँ जटिल हैं।

भारत ने आत्मनिर्भरता की आवश्यकता को और अधिक महसूस किया। "आत्मनिर्भर भारत अभियान" के माध्यम से मेक इन इंडिया को नई गति मिली। चिकित्सा उपकरण, दवाइयाँ, वैक्सीन तथा इलेक्ट्रॉनिक्स के घरेलू उत्पादन पर विशेष बल दिया गया। भारत ने वैक्सीन निर्माण में वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भविष्य की संभावनाएँ– मेक इन इंडिया योजना भारत को विश्व की प्रमुख औद्योगिक शक्ति बनाने की क्षमता रखती है। भविष्य में निम्न क्षेत्रों में बड़ी संभावनाएँ हैं– हरित ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन, सेमीकंडक्टर निर्माण, रक्षा उत्पादन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, अंतरिक्ष तकनीक। यदि सरकार आधारभूत संरचना, शिक्षा, कौशल विकास और तकनीकी अनुसंधान पर निरंतर ध्यान देती है, तो भारत वैश्विक विनिर्माण केन्द्र बन सकता है।

निष्कर्ष– मेक इन इंडिया योजना भारत के औद्योगिक और आर्थिक विकास की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है। इस अभियान ने भारत को वैश्विक निवेशकों के लिए आकर्षक गंतव्य बनाया तथा विनिर्माण क्षेत्र को नई ऊर्जा प्रदान की। विदेशी निवेश में वृद्धि, मोबाइल निर्माण उद्योग का विस्तार, रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता तथा रोजगार सृजन जैसी उपलब्धियाँ इसकी सफलता को प्रमाणित करती हैं।

हालाँकि अभी भी आधारभूत संरचना, कौशल विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं, फिर भी यह योजना भारत को आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हो रही है।

मेक इन इंडिया केवल आर्थिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि यह "नए भारत" के निर्माण का दृष्टिकोण है। यदि सरकार, उद्योग और समाज मिलकर इस अभियान को आगे बढ़ाते हैं, तो भारत आने वाले वर्षों में विश्व अर्थव्यवस्था में अग्रणी स्थान प्राप्त कर सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. दत्त एवं सुंदरम कृ भारतीय अर्थव्यवस्था।
2. मिश्रा एवं पुरी कृ भारतीय अर्थव्यवस्था।
3. रमेश सिंह कृ भारतीय अर्थव्यवस्था।
4. भारत सरकार, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट।
5. नीति आयोग रिपोर्ट, भारत सरकार।
6. आर्थिक सर्वेक्षण, भारत सरकार।
7. makeinindia.com
8. startupindia.gov.in
9. investindia.gov.in
10. commerce.gov.in

*****